गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 4

वैज्ञानिक चार्ल्स मिसनर ने आइन्सटाइन पर टिप्पणी की, "जगत की रचना भव्य है और उसे हलकी बात न समझा जाए।" मेरे विचार में यही कारण था कि आइन्सटाइन धर्मतन्त्र में बहुत कम संबन्ध रखता था जबकि मुझे वह अत्यधिक धार्मिक प्रवृति का लगता है। उसने देखा होगा कि प्रचारक परमेश्वर के बारे में क्या कहते हैं और उसे ऐसा प्रतीत हुआ होगा कि वे उसकी निन्दा करते हैं। उसने उनकी कल्पना से कहीं अधिक वैभव देखा था और सोचा कि वे सत्य की चर्चा नहीं करते हैं। मेरे विचार में, उसे ऐसा लगता था कि जिन धर्मों से वह परिचित है, उनमें जगत के कर्ता के लिए उचित सम्मान नहीं है।

मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे लिए कहे कि मैं सत्य की चर्चा नहीं करता हूं। यही कारण है कि वचन (बाइबल) कलीसिया में अति महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर के वचन की लम्बाई–चौड़ाई का आंकलन अधिक नहीं किया जा सकता है।

कलीसिया मनुष्य के प्रचार की गंभीरता को जानती है। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पतरस गंभीरता और सामर्थ्य से प्रचार करता है।

2 कुरिन्थियों 4:4–6, "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।"

मैं लोगों को कहते सुनता हूं कि हमें कलीसिया में अनौपचारिक चर्चा करना चाहिए। औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। क्या हमें यह बोध नहीं है कि इस संसार में एक सच्चा परमेश्वर है जो मनुष्यों के मन में ज्योति जला रहा है और चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य को स्वर्ग का सदाकालीन आनन्द प्राप्त हो परन्तु शैतान चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य नरक की आग में जले। हम बीच में हैं और मसीह यीशु का प्रचार

करते हैं जिसमें अनौपचारिक बातों की—चुटकुले, मनोरंजन आदि की संभावना ही नहीं है। यह एक अत्यधिक गंभीर बात है। परमेश्वर के वचन के सुनने पर जीवन आधारित है।

यही कारण है कि प्रचारक या शिक्षक परमेश्वर की वाणी सुनाता है। परन्तु हम परमेश्वर की बातों को हलका कर देते हैं। दूसरी ओर हम अपने विचारों और मान्यताओं को बड़ा करते हैं। हमें वचन की आवश्यकता है। यहेजकेल 11:5, "तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और मुझ से कहा, "ऐसा कह, यहोवा यों कहता हैः कि हे इस्राएल के घराने, तुम ने ऐसा ही कहा है; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूं।"

वचन में अपने विचार जोड़ना खतरनाक है। नहेम्याह की पुस्तक को कलीसिया में अगुआई की पुस्तक कहा जाता है और हम उसमें से अगुआई संबन्धित बातें करते हैं। अब यदि यह पुस्तक अगुआई पर परमेश्वर की पाठ्य पुस्तक है तो नहेम्याह 13:23 में समस्या खड़ी हो जाती है, "फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहूदी दिखाई पड़े जिन्होंने अशदोदी, अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह ली थीं।"

वह कहता है, "मैं ने उनको डांटा और कोसा, और उनमें से कुछ को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाए..." क्या यह अगुवाई की शिक्षा है? हम जो चाहते हैं वही चुनते हैं और परमेश्वर की इच्छा को कम करके अपनी इच्छा का अधिक मान बढ़ाते हैं।

हम परमेश्वर की वाणी को महत्व देकर परमेश्वर की महानता को प्रतिष्ठित करते हैं जब परमेश्वर का वचन सुनाया जाता है और उसकी महानता प्रकट की जाती है। यही कारण है कि जब मैं प्रचार करता हूं और अगुआ कहता है, "आराधना के बाद भाई... दो शब्द कहेंगे।" नहीं, मैं दो शब्द नहीं, वचन का प्रचार करूंगा कि श्रोता परमेश्वर की महिमा की पकड़ में आएं क्योंकि उसके वचन का प्रकाशन होगा। जब परमेश्वर के वचन का प्रचार किया जाता है तब हम उसकी महानता देखते हैं और उसकी आराधना करते हैं। यह है वास्तविक योजना।

भजन 78:1—4, "हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनों की ओर कान लगाओ! मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा, जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है। उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगें, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगें।"

नहेम्याह 8:5–6, "तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊंचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया।"

आराधना का जोश गानों के साथ समाप्त नहीं होता है, वचन के साथ बढ़ता है। अब कोई कहेगा, "आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे परमेश्वर का वचन ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।" सुनिये भजन 56:4, "परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूंगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?"

भजन 119:48, "मैं तेरी आज्ञाओ की ओर जिनसे मैं प्रीति रखता हूं, हाथ फैलाऊंगा, और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा।"

परमेश्वर का वचन उसके नाम के तुल्य ही रखा जाता है। उसकी प्रतिष्ठा की जाती है। अतः हमें इस पुस्तक का सम्मान करना है और इसकी शिक्षा देना है। यदि हम वचन का प्रचार न करें तो हम कलीसिया के उत्तरदायित्व को नहीं निभा रहे हैं। कलीसिया परमेश्वर के वचन का सम्मान करती है। वचन से रहित प्रचारक असहाय होता है। क्या हमारे विचार में मनुष्यों को किस बात के आज्ञापालन हेतु पुकार देना है? केवल वचन! नीतिवचन 29:18, "जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।"

मुझे एक कष्टदायक अवसर स्मरण है। एक बड़ा ही प्रभवशाली प्रचारक प्रचार करनेवाला था। उसने खड़े होते ही पहली बात जो कही वह थी, "मैं अपनी बाइबल लाना भूल गया।" और फिर वह बताने लगा कि किस प्रकार उसने आज के प्रवचन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की और यहां वहां घूमता रहा कि परमेश्वर से ज्ञात करे कि आज क्या वचन सुनाना है और फिर उसने कहा कि परमेश्वर ने उस पर कुछ भी प्रकट नहीं किया। वह संपूर्ण समय चुटकुले सुनाता रहा और व्यर्थ की बातें करता रहा और अन्त में कहा, "मेरे विचार में आज परमेश्वर हमसे कुछ नहीं कहना चाहता है।" और वह बैठ गया। मैं सोचने लगा बाइबल में 66 पुस्तकें हैं। आप कोई सी भी पुस्तकें खोल लें, आपके पास परमेश्वर का सन्देश है। आपको न तो खोजने की आवश्यकता है न ही कुछ नई बात बताना है, न ही घूमने जाना है, बस बाइबल खोल कर पढ़ें

और आपके पास परमेश्वर का सन्देश है। हमें कोई नई बात बनाने का प्रयास नहीं करना है। हमें केवल वचन से सुनाना है। परमेश्वर के वचन के बिना पास्टर असहाय है।

मैं केवल भोजन परोसता हूं। वचन बिना पास्टर असहाय है और वचन बिना कलीसिया असमर्थ है। आप कलीसिया का निर्माण कैसे करते हैं अपनी खोज पर? कदापि नहीं।

अतः कलीसिया को परमेश्वर के वचन का महत्व होना है। अगला चरण, कलीसिया यह निश्चित करती है कि वचन वर्तमान आवश्यकताओं के प्रति अनन्त प्रतिज्ञाओं के साथ कैसे संबोधित करता है। पतरस यही कर रहा है, प्रेरितों के काम अध्याय 2 में वह पुराने नियम से संदर्भ दे रहा है। और वह वर्तमान घटना से उसे संबन्धित कर रहा है। हम वचन की शिक्षा देते हैं और उसे वर्तमान की परिस्थितियों में प्रासंगिक बनाते हैं।

बाइबल में अनेक प्रतिज्ञाएं दी गई हैं:

सफलता की प्रतिज्ञाः यहोशू 1:8–9, "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा। क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बांधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।"

आशिषों की प्रतिज्ञाः भजन 19:7–11, "यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है; यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं। उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।"

मार्गदर्शन की प्रतिज्ञाः भजन 119:105, "तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।"

ढाढ़स बन्धाने की प्रतिज्ञाः यशायाह 40:1–2, "तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति! यरूशलेम से शान्ति की बातें कहो; और उससे पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है, तेरे अधर्म का दण्ड अंगीकार किया गया हैः यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना दण्ड पा चुका है।"

शान्ति की प्रतिज्ञाः फिलिप्पियों 4:4–7, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो। प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"

बुद्धि की प्रतिज्ञा– 2 तीमुथियुस 3:14–17, "पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।"

उद्धार की प्रतिज्ञाः रोमियों 10:17, "अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

सन्तोष की प्रतिज्ञाः 1 पतरस 2:2, "नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।"

अतः हम अन्य किसी बात कों क्यों सुनें?

कलीसिया परमेश्वर के वचन के उद्देश्य को समझती है। धर्मशास्त्र में परमेश्वर का उद्देश्य है कि मसीह यीशु की महिमा को व्यक्त करे। प्रभु यीशु बाइबल का केन्द्र है। अतः बाइबल में हर एक बात प्रभु यीशु की ओर संकेत करती है। परन्तु यही नहीं बाइबल हमें प्रभु यीशु के स्वरूप में भी ढालती है। मैं आपको बाइबल का उद्देश्य समझाता हूं। ध्यान से सुनें। उत्पत्ति 1:1, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

उत्पत्ति 1:26–27, उसने मनुष्य को अपने रूप में बनाया। "फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।" तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।"

अध्याय 3 में मनुष्य में परमेश्वर का रूप विकृत हो गया और तब से ही परमेश्वर मनुष्य को उबारकर उसे पुनः अपने रूप में लाने का प्रयास कर रहा है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, अध्याय 21 में नये आकाश नई पृथ्वी का उल्लेख किया गया है। प्रकाशितवाक्य 21:1, "फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।"

उत्पत्ति अध्याय 3 के अन्त में परमेश्वर ने मनुष्य को अदन की वाटिका से निकाल दिया और उसके प्रवेश द्वार पर एक करूब को खड़ा किया। जिसके हाथ में आग की तलवार थी जो जीवन के वृक्ष की रक्षा करता था कि कोई उस तक न पहुंच पाए।

सुनिये प्रकाशितवाक्य 22:1–3 में लिखा है, "फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।"

यहां जीवन का वृक्ष फिर प्रकट हो रहा है।

अति सुन्दर वचन! पद 4 में लिखा है कि हम प्रभु यीशु का चेहरा देखेंगे। यही तो धर्मशास्त्र का उद्देश्य है। भजन 17:15 में लिखा है, "परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा।"

अतः विचार करें: मनुष्य को परमेश्वर ने अपने रूप में बनाया। मुझ में परमेश्वर के रूप की सुन्दरता बिगड़ गई। परमेश्वर ने मुझे फिर से अपने रूप में स्थापित किया और परमेश्वर से मेरा मेल हुआ। इसके मध्य में जो कहानी है वह यह है कि परमेश्वर कैसे वह करता है। यही उद्देश्य है जिसे आप देखते हैं।

रोमियों 8:28 में लिखा है, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

यह भलाई क्या है? रोमियों 8:29, "क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।"

सब कुछ इसी ओर अग्रसर है कि हम उसके रूप में पुनः आ जाएं। स्मरण रखें: आप सृजनहार परमेश्वर के रूप में बनाए गए थे।

2 कुरिन्थियों 3:18, "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

2 पतरस 1:3–4, "क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।"

1 यूहन्ना 3:2, "हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"

बाइबल में अनेक प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं जैसे तलाक देने के बाद मैं फिर से मेल करूं तो क्या होगा? अपनी किशोर सन्तान को कैसे बड़ा करूं? इन प्रश्नों पर अनेक मानवीय सुझाव प्रकाशित किए गए हैं। परन्तु सावधान! जब हम बाइबल की अपेक्षा मानवीय सुझावों पर ही ध्यान देते हैं तब हम हमारे जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य प्राप्ति के सत्य को ग्रहण करने से चूक जाते हैं। परमेश्वर का उद्देश्य है, हमें प्रभु

यीशु का स्वरूप प्रदान करना– विचार करें। कुछ लोग सोचते हैं, "मैं जीवन की इस परिस्थिति में हूं। आप मुझे मोआबी जाति के बारे में क्यों बता रहे हैं?"

रूत की पुस्तक में मोआब का उल्लेख इसलिए किया गया है कि वह आपके हृदय में प्रभु यीशु की छवि स्थापित करे और आपकी सहायता करे कि आप उसके साथ कदम से कदम मिलाकर उसकी आत्मा में आगे बढ़ें।

अब जब हम आर्थिक संकट में हों तो यहां उसका उत्तर नहीं है कि हम क्या करें। परमेश्वर का आत्मा हम में अन्तर्वास करता है और वह हमारे साथ उस संकट में चलेगा। वह हमारे मन को और हमारी इच्छा को एक रूप प्रदान करेगा और हमें अधिकाधिक मसीह की समानता प्रदान करेगा जो हमारे पास कितना पैसा है उससे अधिक उत्तम होगा। हमारे लिए यही आवश्यकता है। इसके बिना हम अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से चूक जाते हैं और परमेश्वर को भी उसकी महिमा से रहित कर देते हैं। हम कलीसिया में अगुओं से समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। मैं तो इस सेवा में अयोग्य हूं। मेरे पास हर एक समस्या का उत्तर नहीं है। परन्तु मेरे पास आपके लिए सबसे आवश्यक बात है जो आपको मसीह के स्वरूप में लाएगी और आपको उसके साथ संपर्क में लाएगी जो आपके साथ हर एक परिस्थिति में चलेगा चाहे वह परिस्थिति कैसी भी हो। वाल्टर कायसर ने कहा, "अधिकांश प्रचारक एक या दो बाइबल संदर्भों से ही अपना पूरा सन्देश सुना देते हैं और बहुत ही कम लोग समझ पाते हैं। उनसे भी अधिक तो वह हैं जो बाइबल को विभिन्न पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति हेतु असमर्थ मानते हैं। अतः वे अपने प्रचार मनोविज्ञान पर लिखी हुई पुस्तकों पर आधारित करते हैं। बाज़ार की रीति यह है कि हम उन्हें वह दें जो वे सुनना चाहते हैं कि वे लौटकर हमारे ही पास आएं और हमारे द्वारा बनाए गए विशाल आराधनालयों का व्यय वहन करें।"

दूसरा विकल्प यह है, जब हम मानवीय सुझावों से हटकर बाइबल में परमेश्वर के वचन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तब हम हमारे जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य पूर्ति से भर जाते हैं और हम मसीह के स्वरूप में होकर परमेश्वर का महिमान्वन करते हैं। हमें सबसे अधिक इसी का आवश्यकता है कि हम मसीह के स्वरूप में ढल जाएं। वचन हम में प्रभु यीशु का चरित्र उत्पन्न करता है और हम में मसीह यीशु का विवेक स्थापित करता है।

यूहन्ना 15:5–7, "मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहे, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।"

2 कुरिन्थियों 10:3–5, "क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊंची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

इससे हमारा मन और मस्तिष्क बदल जाता है और फिर हमारा चरित्र और विवेक नया रूप ले लेता है और अन्त में वचन हम में मसीह का व्यवहार उत्पन्न करता है।

याकूब 1:22–25, "परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।"

कुलुस्सियों 1:27–29, "जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं।"

अतः हम अपने विश्वास को जीवन से प्रकट करते हैं। यही तो सुन्दरता है। जब वचन हमें भीतर से परिवर्तित करता है तब हम मसीह यीशु से अधिकाधिक प्रेम करने लगते हैं। हम अधिकाधिक प्रभु यीशु के समान सोचने लगते हैं। हम प्रभु यीशु के समान व्यवहार करने लगते हैं। जीवन परिवर्तन इस प्रकार होता

है। परन्तु यदि हम आरंभ करते समय सोचें, "मनुष्य को जानना है कि उसे क्या करना है।" और हम उनसे कहते हैं, "यह करो। ये सब सुझाव हैं।" हम किशोरों को अनेक सुझाव दे सकते हैं कि वे पवित्र जीवन कैसे जीएं परन्तु जब तक वे प्रभु यीशु और वचन से प्रेम नहीं करेंगे और वह उनका मन परिवर्तित नहीं करेगा, उनके विचार नहीं बदलेगा, उनकी मन की इच्छाओं को नहीं बदलेगा तब तक कुछ नहीं होगा। उन्हें यह बोध होना आवश्यक है कि प्रभु यीशु संसार की सब वस्तुओं से अधिक सन्तोष प्रदान करता है। जब तक ऐसा नहीं होगा वे पवित्रता में नहीं रह पाएंगे। वे प्रयास तो करेंगे परन्तु स्थिर न रह पाएंगे क्योंकि हमें इस प्रयास में प्रभु यीशु की आवश्यकता है। वचन ही ऐसा कर सकता है। युवकों का विश्वास संगति तथा कॉलेज में नष्ट हो जाता है क्योंकि मसीह का चरित्र उनमें रोपित नहीं हुआ है कि वे मसीही मानसिकता में दृढ़ हों और उनका अविश्वासी शिक्षक उन्हें प्रभावित न कर पाए।

हमें इस वचन की आवश्यकता है और कलीसिया परमेश्वर के वचन का चुनाव प्रकट करती है क्योंकि वचन की शिक्षा अपराध बोध उत्पन्न करती है। वह हृदय छेद देती है। वह दोधारी तलवार से भी अधिक तेज़ है। (इब्रानियों 4) मनुष्य अपनी आवश्यकता और परमेश्वर के प्रावधान की गंभीरता को समझता है। वचन मन फिराव की व्याख्या करता है। वह हमें बताता है कि हमारा उद्धार कैस होगा। प्रेरितों के काम 2:37–38, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?" पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।"

पतरस कहता है कि मन फिराओ, न कि आंखें बन्द करके प्रार्थना करो तो प्रभु यीशु को ग्रहण कर पाओगे। हमें कलीसिया में मन फिराव के लिए बाइबल शब्दावलियों का प्रयोग करने में विवेकी होना है। हम किसी को गलत मार्ग पर नहीं ले जा सकते हैं। हम उन्हें निराधार मंच पर खड़ा नहीं कर सकते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में दो शब्द बार बार देखते हैं "मन फिराना" और "विश्वास," कभी दोनों साथ तो कभी दोनों अलग अलग।

प्रेरितों के काम 3:19, "इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं।"

प्रेरितों के काम 8:22, "इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए।"

प्रेरितों के काम 16:31, "उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"

प्रेरितों के काम 17:30, "इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।"

प्रेरितों के काम 20:21, "वरन् यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।"

प्रेरितों के काम 26:20, "परन्तु पहले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के, और तब यहूदिया के सारे देश के रहनेवालों को, और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो।"

उद्धार पाने पर हम अपने पापों से मन फिराकर विश्वास करते हैं। हम प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं कि वह पुनर्जीवित उद्धारकर्ता और राज्य करनेवाला प्रभु है। यह कलीसिया की शिक्षा है।

रोमियों 10:9–10 में लिखा है, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।"

वचन मन की लालसा उत्पन्न करता है। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में लिखा है कि वचन ग्रहण करके उन्होंने बपतिस्मा लिया और प्रेरितों के काम 2:42, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

देखिए, पवित्र आत्मा की अगुआई में आने के बाद हम वचन की लालसा करते हैं। वचन का स्वाद लेने के बाद हम जान लेते हैं कि वह कैसा उत्तम है और फिर हमें और किसी बात की लालसा नहीं होती। हम वचन पर भरोसा कर सकते हैं। वचन हम में लालसा उत्पन्न करता है और आप मनुष्यों के सुझावों के उत्तर में कहेंगे, "यह अच्छा है परन्तु परमेश्वर का वचन नहीं है।"

1 पतरस 2:1–3, "इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को दूर करके, नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ, क्योंकि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।"

कलीसिया पोषण करती है

कलीसिया के सदस्यों में क्या समानता है?

चौथा काम है, कलीसिया पोषण करती है। प्रेरितों के काम 2:42, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

"संगति" एक महान शब्द है। अतः कलीसिया के सदस्यों में क्या समानता है? उनको बांधनेवाली बात क्या है?

पहली बात, सार्विक आत्मिक आधार। नये नियम में कलीसिया की संगति के अनेक संदर्भ हैं।

प्रेरितों के काम 4:32, "विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे, यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था।"

हम मसीह की देह और लहू में सहभागी होते हैं।

1 कुरिन्थियों 10:16, "वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?"

हम मसीह की आत्मा में सहभागी होते हैं।

2 कुरिन्थियों 3:14, "परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है, पर वह मसीह में उठ जाता है।"

हम मसीह के सुसमाचार में सहभागी होते हैं।

फिलिप्पियों 1:5, "इसलिये कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो।"

हम मसीह के कष्टों में सहभागी होते हैं।

फिलिप्पियों 3:10, "ताकि मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।"

हम मसीह के जीवन में सहभागी होते हैं।

1 यूहन्ना 1:3–7, "जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए। जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह ह; कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते; पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"

अतः हम एक सार्विक आत्मिक आधार के सहभागी हैं और सार्विक सामाजिक व्यवहार में सहभागी हैं। हम एक दूसरे के साथ जीवन बांटते हैं। आराधना में मात्र उपस्थित होना ही नहीं, जीवन, संपदा और संघर्षों को परस्पर बांटना है।

प्रेरितों के काम 2:43–47, "और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। वे अपनी–अपनी सम्पत्ति और सामान बेच–बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर–घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई

से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

नये नियम में, कलीसिया के संदर्भ में अनेक बार "एक दूसरे के साथ" आता है। कलीसिया पोषण करती है, इस संबन्ध में हम "एक दूसरे के साथ" को चार परिप्रेक्ष्यों में देखेंगे। रोमियों अध्याय 12 में कलीसियाई समुदाय का अति उत्तम चित्रण दिया गया है। इसका आरंभ हम पर परमेश्वर की दया से आरंभ होता है।

रोमियों 12:1–2, "इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

हम परमेश्वर की दया पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम एक दूसरे को दया दिखाते हैं। पौलुस "परमेश्वर की दया का स्मरण करा कर" आरंभ करता है और परमेश्वर की आराधना की चर्चा करता है तदोपरान्त वह एक दूसरे के साथ सहभागिता की चर्चा अति सुन्दर रूप से करता है। संपूर्ण धर्मशास्त्र में इसकी वृहत्त चर्चा है।

रोमियों 12:9–13, "प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई मे लगे रहो। भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरो रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। आशा मे आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो; प्रार्थना मे नित्य लगे रहो। पवित्र लोगों को जो कुछ आवश्यक हो, उसमें उनकी सहायता करो; पहुनाई करने मे लगे रहो।"

हम एक दूसरे की कैसे सुधि लेते हैं? हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

रोमियों 9:12, "आशा मे आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो; प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।"

यहां निष्कपट प्रेम, भाइचारे का प्रेम और स्नेह इन तीनों शब्दों से कलीसिया का पारिवारिक लगाव प्रकट होता है। हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं। यूहन्ना 13:34–35 में प्रभु यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा

देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

हम एक दूसरे का अतिथि सत्कार करते हैं।

1 पतरस 4:9, "बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि–सत्कार करो।"

हम एक दूसरे का अभिवादन करते हैं।

1 कुरिन्थियों 16:20, "सब भाइयों का तुम को नमस्कार। पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।"

हम एक दूसरे को ग्रहण करते हैं।

1 पतरस 4:9, "बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि–सत्कार करो।"

हम एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

रोमियों 12:20 एक महान उक्ति है, "परन्तु "यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।"

हम प्रेम से एक दूसरे की सेवा करते हैं।

गलातियों 5, "एक दूसरे की सेवा करो।"

हम एक दूसरे को शिक्षा देते हैं।

रोमियों 15:14, "हे मेरे भाइयो, मैं स्वयं तुम्हारे विषय में निश्चय जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो, और एक दूसरे को चिता सकते हो।"

हम एक दूसरे की प्रतीक्षा करते हैं। हम धीरज धरते हैं।

1 कुरिन्थियों 11:33, "इसलिये, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो।"

हम एक दूसरे को क्षमा करते हैं। एक दूसरे के अधीन होते हैं।

कुलुस्सियों 3:13, "और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।"

हम एक दूसरे को प्रेम में उकसाते हैं।

इब्रानियों 10:24, "और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें।"

हम एक दूसरे के साथ शान्ति बनाते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 5:13, "और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।"

हम एक दूसरे को ढाढ़स बन्धाते हैं। मुझे गलातियों अध्याय 6 बहुत अच्छा लगता है, "एक दूसरे का बोझ उठाओ।"

2 कुरिन्थियों 1:3–7, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दुःखों में हम अधिक सहभागी होते हैं, वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होती हैं। यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये है; और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति के लिये है; जिसके प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों को सह लेते हो, जिन्हें हम

भी सहते हैं। हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है; क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जैसे हमारे दुःखों में, वैसे ही शान्ति में भी सहभागी हो।"

इस गद्यांश में दस बार "शान्ति" शब्द आया है। यहां लिखा है कि हम पर कष्ट कैसे आते हैं और हम एक दूसरे को शान्ति कैसे देते हैं। परमेश्वर कष्टों द्वारा हमें अपने निकट लाता है कि हम उस पर निर्भर हों परन्तु अपने स्वार्थ के लिए नहीं।

1 कुरिन्थियों 1:8–11, "वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है। हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं।"

परमेश्वर दूसरों के लिए हमें कष्ट देता है। कष्टों में परमेश्वर से शान्ति पाने पर हम दूसरों को शान्ति दे सकते हैं।

2 कुरिन्थियों 7:6, "तौभी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हम को शान्ति दी।"

परमेश्वर हमारे कष्ट उसके अपने लिए काम में लेता है। अपनी निर्बलता में हम उसके सामर्थ्य में भरोसा रखें।

2 कुरिन्थियों 12:7–10, "इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूंसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।"

हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं और पाप स्वीकार करते हैं।

याकूब 5:16, "इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने–अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओः धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।"

हम एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

फिलिप्पियों 2:3, "विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।"

हम एक दूसरे का निर्माण करते हैं।

रोमियों 14:19, "इसलिये हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल–मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।"

हम एक दूसरे को शिक्षा देते हैं।

कुलुस्सियों 3:16, "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।"

हम एक दूसरे के साथ दयालु व्यवहार करते हैं।

इफिसियों 4:32, "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

पारस्परिक व्यवहार के ये संदर्भ पूरे नहीं हैं। बहुत संदर्भ हैं। कलीसिया का अर्थ आराधना में एक दूसरे के साथ बैठना ही सब कुछ नहीं है। कलीसियाई संबन्ध सच्चा जीवन निवेश है। इसमें समय, शक्ति, भावनाएं और कोमलता की आवश्यकता है। अतः जब मैं पूछता हूं, "क्या आप कलीसिया के प्रति समर्पित हैं?

तो मैं यही पूछता हूं कि आप क्या किसी स्थानीय कलीसिया में ऐसा व्यवहार करते हैं।" यह इतना अधिक महत्वपूर्ण क्यों है?

परिवार का प्रसन्न रहना पिता परमेश्वर की महिमा प्रकट करता है। जब हम एक दूसरे से इस प्रकार का सुसमाचार आधारित प्रेम करते हैं तो परमेश्वर का महिमान्वन होता है। अतः हम कलीसिया में एक दूसरे की सुधि लेते हैं। यह पोषण है।

हम एक दूसरे के साथ सेवा करते हैं।

पौलुस कलीसिया में विभिन्न वरदानों की चर्चा करता है। रोमियों 12:3–8 में व्यक्त किया गया है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से निर्मित एक परिवार हैं।

रोमियों 12:3–8, "क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूं कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे। क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे; यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे; यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे; जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।"

परमेश्वर ने हम में से हर एक को अनुग्रह प्रदान किया है। हमारे भलाई अनुग्रह का प्रमाण है। 1 पतरस 4:10, "जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।"

1 कुरिन्थियों 15:10, "परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी कियाः तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।"

हम अनुग्रह द्वारा निर्मित हैं और वरदानों में विविध हैं। आत्मिक वरदान अनुग्रह के वरदान हैं। वे परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए हैं। हर एक कलीसियाई सदस्य को वरदान प्राप्त है।

1 कुरिन्थियों 12:15–26, "यदि पांव कहे, "मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? और यदि कान कहे, "मैं आंख नहीं, इसलिये देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं। यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है। यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है। आंख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं," और न सिर पांवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।" परन्तु देह के वे अंग जो दूसरों से निर्बल लगते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं; और देह के जिन अंगो को हम आदर के योग्य नहीं समझते उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं, फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं। परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को आदर की घटी थी उसी को और भी बहुत आदर मिले। ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिये यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।"

कलीसिया विश्वास का समुदाय है जिसमें हर एक का स्थान है। इस संदर्भ में प्रकट है कि देह के हर एक अंग का अपना महत्व है। कोई किसी से कम नहीं है। अतः ऐसा कभी न सोचें, "मेरी आवश्यकता नहीं है।" परन्तु हम आत्माभिमान से सतर्क रहें, "मुझे आपकी आवश्यकता नहीं है।" आपको कलीसिया की उसके वरदानों की आवश्यकता है।

हमें परस्पर तुलना भी नहीं करना है। यह सब अनुग्रह से ही है। अतः अनुग्रह पर निर्भर करें। किसी दूसरे की नकल भी न करें। सबका योगदान आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

हम एक दूसरे को कुछ न कुछ देते हैं।

व्यवस्थाविवरण 15:1–11, "सात सात वर्ष बीतने पर तुम छुटकारा दिया करना, अर्थात् जिस किसी ऋण देनेवाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपने पड़ोसी या भाई से उसे बरबस न भरवाए, क्योंकि यहोवा के नाम से इस छुटकारे का प्रचार हुआ है। परदेशी मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है, परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसे तू बिना भरवाए छोड़ देना। तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा, क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो, उसमें वह तुझे बहुत ही आशीष देगा। इतना अवश्य है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने, और इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी करे। तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत जातियों को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न पड़ेगा; और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएंगी।। "जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास द्ररिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना, और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना; जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसकी जितनी आवश्यकता हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना। सचेत रह कि तेरे मन में ऐसी अधर्म चिन्ता न समाए, कि सातवां वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है वह निकट है, और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके उसे कुछ न दे, और वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई दे, तो यह तेरे लिये पाप ठहरेगा। तू उसको अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिनमें तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा। तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएंगे; इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि तू अपने देश में अपने दीन–दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना।"

व्यवस्थाविवरण का यह परिदृश्य प्रेरितों के काम अध्याय 2 और 4 में फिर से उभर रहा है।

प्रेरितों के काम 2:45, "वे अपनी–अपनी सम्पत्ति और सामान बेच–बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।"

प्रेरितों के काम 4:32–37, "करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे, यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था। प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। उनमें कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच–बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर

रखते थे; और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे। यूसुफ नाम साइप्रस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बरनबास (अर्थात् शान्ति का पुत्र) रखा था। उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए।"

2 कुरिन्थियों 8, 9 का चित्रण भी प्रेरितों के काम 2, 4 में आदर्श रूप में प्रकट है– संपदा बेचकर एक दूसरे के लिए पैसा लगाना। 2 कुरिन्थियों 8, 9 में इसी बात का प्रोत्साहन, प्रबोधन वरन् आज्ञा दी गई है।

2 कुरिन्थियों 9:6–15, "परन्तु बात यह हैः जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ क, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। जैसा लिखा है, "उसने बिखेरा, उसने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।" अतः जो बोनेवाले को बीज और भोजन के लिये रोटी देता है, वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ। क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से न केवल पवित्र लोगों की आवश्यकताएं पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का भी बहुत धन्यवाद होता है। क्योंकि इस सेवा को प्रमाण स्वीकार कर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके अधीन रहते हो, और उनकी और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है धन्यवाद हो।"

हम स्वेच्छा से दान देते हैं। अतः कुड़ कुड़ कर देना कलीसिया का गुण नहीं है। हम परमेश्वर द्वारा हमें दी गई आशिषों के अनुसार देते हैं। 2 कुरिन्थियों 8 में मकिदुनिया के विश्वासी अपनी क्षमता से अधिक दान देते थे। यह दक्षिण पूर्व एशिया की बात है कि मैं वह आवासीय कलीसिया में वचन की शिक्षा दे रहा था। समापन पश्चात उन्होंने आकर मुझसे आग्रह किया कि मैं उनकी आर्थिक भेंट स्वीकार करूं। यह दान बिना कुड़कुड़ाए दिया गया था। यही बात तो पौलुस 2 कुरिन्थियों 8 में कह रहा है। हम कम से कम अपनी क्षमता के अनुसार तो दान दें। मरकुस 12 में विधवा की दमड़ी यही प्रकट करती है। यही पौलुस 2 कुरिन्थियों 8 में कहता है।

मरकुस 12:41–44, "वह मन्दिर के भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं; और बहुत से धनवानों ने बहुत कुछ डाला। इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती हैं, डालीं। तब उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है; क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।"

नये नियम में दान देने का सच तो यह है कि हम अनुग्रह के विभिन्न प्रमाण स्वरूप दान दें और स्वेच्छा से दें। परमेश्वर के लिए उदारता से देने के कारण परमेश्वर हमें उदारता से देता है। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि आप परमेश्वर के लिए दान देंगे तो धनवान हो जाएंगे। मकिदुनिया के विश्वासियों ने इस विचार को झूठा सिद्ध किया। 2 कुरिन्थियों 8 में पौलुस के कहने का अर्थ है कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त आपको वरदान देता है।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त और अन्यों के लिए हमें बहुतायात से देता है। जॉन वेसली इसका एक अति उत्तम उदाहरण हैं। वह अपने उपयोग के लिए अपनी आय पर अंकुश लगाते थे। उन्होंने अपने व्यय रु 20,000/– वार्षिक ठहराए और उनकी आय कभी कभी रु 1,60,000/– वार्षिक होती थी परन्तु वे रु 20,000/– ही रखकर 1,40,000/– दान कर देते थे। यह कोई नियम तो नहीं है परन्तु कहने का अर्थ है कि हमें दान देना चाहिए।

हम स्वेच्छा से उदारतापूर्वक देते हैं। हम सहर्ष देते हैं। 2 कुरिन्थियों 9 में लिखा है कि परमेश्वर सहर्ष दान देनेवालों से प्रेम करता है। परमेश्वर हमें दान देने पर विवश नहीं करता है। परमेश्वर ने हमें स्वतंत्रता दी है। कलीसिया में दान देने के विषय 2 कुरिन्थियों 8–9 हमारा मार्गदर्शक हैं। हम दूसरों के निमित्त अपने अधिकारों का त्याग करते हैं और दूसरों के लिए अपने संसाधन जुटाते हैं और अन्त में हम परमेश्वर के धन्यवाद को बढ़ावा देते हैं। दान देना परमेश्वर के जनों को परस्पर जोड़ता है।

कृपया देखें रोमियों 15:26, "क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।"

यहां "चन्दा" का मूल अर्थ है सहभागिता जिसका अनुवाद संदर्भ के अनुसार "चन्दा" किया गया है। ये गरीब कलीसियाएं यरूशलेम के विश्वासियों के साथ अपने संसाधन बांट रही थी। यह सहभागिता का परिदृश्य है। इन कलीसियाओं का दान देने के द्वारा कहना था, "हम आपके साथ हैं।" "हम एक हैं।" आज हमारी मानसिकता है कि अपने ही ऊपर व्यय करें और भाई–बहन जो वास्तव में भूखे हैं उनकी सहायता में कम से कम दें। इसका अर्थ है, हम कह रहे हैं, "हम आपके साथ नहीं हैं।" मैं चाहता हूं कि हम विभिन्न कलीसियाओं के भाई–बहनों को प्रकट करें कि हम उनके साथ एक हैं। दान देकर प्रकट करें कि हम उनकी सुधि लेते हैं।

दान देना परमेश्वर के जनों को जोड़ता है। वे कलीसिया में दान देते हैं। 1 कुरिन्थियों 16 में पौलुस कहता है कि सप्ताह के पहले दिन कुछ दान अलग रखें। कलीसिया हमारे दान का उत्तरदायित्व उठाती है। 2 कुरिन्थियों 8 में पौलुस अपनी इच्छा व्यक्त करता है कि कलीसियाओं द्वारा दिया गया दान उसी काम में आए जिसके लिए वह दिया गया है– 2 कुरिन्थियों 8:20–21, "हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं।"

दान देने से परमेश्वर की भलाई का मान बढ़ता है, "परमेश्वर का उसके दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।"

हम एक दूसरे का पुनरुद्धार करते हैं

हम पोषण कैसे करते हैं? हम एक दूसरे की सुधि लेते हैं। हम साथ साथ सेवा करके दान देते हैं। चौथी बात, हम एक दूसरे का पुनरुद्धार करते हैं। यहां मैं कलीसिया के अनुशासन की चर्चा करना चाहता हूं। हमने पुनरुद्धार का विचार तो त्याग ही दिया है।

गलातियों 6:1–5, "हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है। पर हर एक अपने ही काम को जांच ले,

और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा। क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा।"

वह कहता है कि हमें एक दूसरे का बोझ उठाना है। "नम्रता के साथ ऐसों को संभालो।" कुछ लोग कलीसियाई अनुशासन के विपक्ष में अपने विचार व्यक्त करते हैं:

कलीसियाई अनुशासन वैधानिक है। अनुशासन में परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम नहीं होता है परन्तु इब्रानियों 12:6 में लिखा है, "क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।"

वे मत्ती 7:1 का उदाहरण देते हैं। मत्ती 7:1–4, "दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। "तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? जब तेरी ही आंख मे लट्ठा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं?'"

उनका दूसरा तर्क है यूहन्ना 8:7, "जब वे उससे पूछते रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, "तूम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।"

सबने पाप किया है। अतः किसी पर उंगली न उठाओ।

अनुशासन के भय से कलीसिया के त्याग का भय होता है।